

महिला को पीएम मोदी और सीएम योगी के बारे में सोशल मीडिया पर अभद्र टिप्पणी पड़ी महंगी



नोएडा ।

आदित्यनाथ के फोटो एडिट कर पोस्ट करने और अभद्र टिप्पणी करने के मामले में पुलिस ने एक महिला को गिरफतार किया है।

आरोपी महिला का नाम रामिनी यादव और वह ग्रेटर नोएडा बोर्ड की गैर सिटी में रहने वाली है। हिंदू युवा वाहिनी के गैरीतावन्दनराज जिला संघोजक की तरफ से महिला के खिलाफ ग्रेटर नोएडा की बिसरख कोतवाली में मुकदमा दर्ज करवाया गया था। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामले की जांच कर-

था। आरोप है कि उसने अपने फेसबुक पर देश के प्रधानमंत्री को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से महिला को न्यायिक दिवास तभी जैल भेज दिया गया है। हिंदू युवा वाहिनी के जिला सञ्चालन रजत शर्मा ने ग्रेटर नोएडा बोर्ड की गैर सिटी के सञ्चालन रजत अभद्र टिप्पणी की खिलाफ मुख्यमंत्री योगी पुलिस योगी के खिलाफ सोशल मीडिया पर व्यापक व्यावाजी के बाबत नाम की एक महिला को खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया

गैरूप कर लिया। गैरूपत्व है कि यह कोई पहल याचिका नहीं है इससे पहले भी प्रदेश के अलग-अलग जिलों में पुलिस योगी और सीएम पुलिस योगी के खिलाफ सोशल मीडिया पर अभद्र टिप्पणी की थी। पुलिस ने मामले में कार्रवाई करने वालों के खिलाफ लगातार करते हुए आरोपी महिला को कार्रवाई करती रही है।

यूपी में स्कूल चलो अभियान का शुभारंभ सीएम योगी ने बच्चों को परोसा भोजन



प्रतापगढ़ ।

बार फिर इस अभियान की शुरूआत की गई है। इस यह अभियान 30 अप्रैल तक चलाया जाएगा। बच्चों को भोजन करवाते हुए सीएम योगी काफी खुश नजर आ रहे थे। इस मिलकर शिक्षा व्यवस्था में सुधार करेंगे। शैक्षणिक संघर्ष में शिक्षकों के तक चलाया जाएगा। अपना योगदान दें। उन्होंने सभी नवनीतिवाचिक विधायिकों से एक-एक स्कूल गोद लेने का आह्वान किया।

कहा कि अपने गोले लिए स्कूल में अपना योगदान दें। उन्होंने सभी नवनीतिवाचिक विधायिकों से एक-एक स्कूल गोद लेने का आह्वान किया।

कहा कि वर्ष 2017 से पहले

परिवर्योग स्कूलों की हालत बहुत बुरी थी। वहां पहुंचने लिखने का अपना योगदान अवश्यक है। अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने जनप्रतिनिधियों और कोरोना की वजह से साल बाद एक नागरिकों से स्कूलों को गोद लेने का

बदली जा रही है।

वह जरूरी है कि हमसे स्कूल दिखें में भी सुन्दर हों। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं की अच्छी उपस्थिति हो। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं की अच्छी उपस्थिति हो। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं की अच्छी उपस्थिति हो। काशिंग होनी चाहिए जिस प्रतिशत बच्चे नियमित रूप से सभी बुनियादी उत्सवों में स्कूल आए। उन्होंने शिक्षकों और ग्रन्तिवाचिक विधायिकों से इसके अधिकारों को प्रेरित करने का कहा कि वर्ष 2017 से पहले परिवर्योग स्कूलों की हालत बहुत बुरी थी। वहां पहुंचने लिखने का अपना योगदान नहीं था। मिशन बच्चों को स्कूल भेजने के लिए आ रहा है तो इसका कारण जाने।

उन्होंने कहा कि स्कूलों की तस्वीर

आ रहा है तो इसका कारण जाने।

पाकिस्तान के सियासी संकट पर कांग्रेस का पहला बयान

नई दिल्ली । पाकिस्तान में सियासी संकट बरकरार है। इमरान खान कांग्रेसके प्रधानमंत्री की नियुक्ति होने तक मुक्त के प्रधानमंत्री पद पर बने होंगे, लेकिन उन्हें कोई फैसला लेने का अधिकार नहीं है। अब पूरी तुनिया की जगत पाकिस्तान पर है। इस पूरे पर पहली बार भारत की विपक्षी पार्टी कांग्रेस के किसी नेता का व्यापार सम्पन्न आया है। पाकिस्तान में चल रहे राजनीतिक संकट पर कांग्रेस नेता शशि शर्वर ने कहा, पाकिस्तान असेंबली के स्पीकर ने बोट नहीं करने दिया। ग्राउंपिंट ने असेंबली भांग कर दिया। मेरे लिये से इससे पहले ऐसा कमी नहीं था। पाकिस्तान में प्रधानमंत्री की गदी पर जो भी बैठे पर पहले लगानी की जगत पाकिस्तान की गदी पर जो भी बैठे हैं। लगानी की जगत पाकिस्तान में प्रधानमंत्री पद पर जो भी बैठे हैं। इस पूरे पर पहली बार भारत की विपक्षी पार्टी का अधिकार नहीं है। अब पूरी तुनिया की जगत पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने विश्व और बार की उपर्योगी प्रधानमंत्री के अधिकार को अनुच्छेद 5 के अधार पर प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ अविवाक के कार्रवाहक विधायिकों से एक-एक अधिकारों को अनुच्छेद 5 के अधार पर प्रधानमंत्री के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया। कहा कि शिक्षक अपने गोले लिए स्कूल में अविवाक के अधिकारों को अनुच्छेद 5 के अधार पर प्रधानमंत्री के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया। अब पूरी तुनिया की जगत पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने विश्व और बार की उपर्योगी प्रधानमंत्री के अधिकार को अनुच्छेद 5 के अधार पर प्रधानमंत्री के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया। अब पूरी तुनिया की जगत पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने विश्व और बार की उपर्योगी प्रधानमंत्री के अधिकार को अनुच्छेद 5 के अधार पर प्रधानमंत्री के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया। अब पूरी तुनिया की जगत पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने विश्व और बार की उपर्योगी प्रधानमंत्री के अधिकार को अनुच्छेद 5 के अधार पर प्रधानमंत्री के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों की अनुच्छेद 5 के अधार पर प्रधानमंत्री के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित करने का आह्वान किया।

पाकिस्तान के अधिकारों को प्रेरित क

सुविचार

संपादकीय

پاکستان میں سانکڑ

पाकिस्तान में सियासी संकट किर गहराना न सिर्फ शर्मनाक, बल्कि दुखत भी है। तकनीक से धन तक, हर छोटी-बड़ी योजने के लिए दुनिया के देशों पर निर्भर पाकिस्तान में इमरान खान की सरकार ने अविश्वास मत प्रस्ताव से बचने के लिए विशेष ताकतों को जिम्मेदार ठहरा दिया है। विशेष स्थिति के बीच वहाँ रविवार को संसद भंग कर दी गई है और अब सबकुछ ठीक रहा, तो 90 दिनों में चुनाव कराया जाएगा। यह संसद में अविश्वास प्रस्ताव पर मतदान होना चाहिए, तभी संसद के दिट्टी स्थिरकर ने विशेष सायिंश का हवाला देते हुए प्रस्ताव को ही खालिज कर दिया। हालांकि, स्पष्ट है कि वहाँ सरकार संसद का विश्वास खो चुकी है और उसने खुद को कुछ दिन और सत्ता में बचाने के लिए यह कदम उठाया है। अब इमरान खान की पूरी कोशिश होगी कि वह कथित विदेशी ताकतों को ही मुद्रा बनाकर चुनाव में जाए और लोगों से बोट मांगे। वयस्ता पाकिस्तान के मतदाता इमरान खान पर विश्वास करें? इशारा साफ है कि पाकिस्तान में आगामी चुनाव बहुत नाटकीय होंगे। बढ़े-बढ़े दावों और वादों की बौछार होगी। आज पाकिस्तान बढ़ जासद सवालों से घिर गया है। दया वार्कइंग अमेरिका इमरान खान की सरकार गिराने में लगा हुआ है? इस मामले में पाकिस्तान अपने सबसे करीबी मित्र पर कठीं उंगली नहीं उठाएगा और जहाँ तक भारत का सवाल है, तो पाकिस्तान में सरकार गिराने या बनाने में भारत की कठीं भूमिका नहीं रही है। कुल मिलाकर, विशेषज्ञ भी यही मान रहे हैं कि इमरान अपनी कमियों का ठीकरा विदेशी ताकतों पर फोड़ रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं कि पाकिस्तान जिस भी देश को दोषी ठहराएगा, उस देश से उसके संबंध और बिगड़ेंगे। खेर, पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के तर्क विषय के गले नहीं उतर हैं और विश्व न केवल बर्बास संसद में अड़ता दिख रहा है, बल्कि सुधीर कोर्ट भी पहुंच गया है। पाकिस्तान के प्रधान न्यायाधीश ने उत्तरी ही आनंदनाथन में समाले की सुनवाई के लिए विशेष पीठ का गठन कर दिया है। विशेषी दल पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता बिलाल ख्वाजा जरदारी का कहना है कि इमरान सरकार ने साधित की धज्जिया उड़ा दी है। कम से कम पंद्रह दिन से यह बात बिल्कुल साफ थी कि विपक्ष संख्यागत में जमजबूत है और सत्तारुद्ध पार्टी में फट इतनी बढ़

चुकी है कि उसे दुरुस्त नहीं किया जा सकता। कायदे से बहुमत बनाए रखने में नाकाम इमरान खान को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे देना चाहिए था या संसद को विश्वास में लेने की पुरजोरी के बाद मतदान कराना चाहिए था, लेकिन उन्होंने संसद में न आते हुए सता जाना रखने का यह आसान तरीका आजमाया। लेकिन विषयक भी हार मानने वाला नहीं है, पूरा विषय एक्जूक्यूटिव कार्यकार साधिकार की मांग कर रहा है। पाकिस्तान में जो अविश्वास का माहौल बन गया है, उसे आचानक से दूर नहीं किया जा सकता। सत्ता मोहर अपनी जगह है, लेकिन लोकतंत्र में सत्ता पास रखने के लिए बहुमत उससे भी ज़रूरी है। हालांकि, यह अच्छी बात है कि पाकिस्तानी फौज परिदृश्य में पीछे है, वरन् ऐसे सियासी दोनों पर उसे सत्ता कठजानी की साजिश में अवसर देखा गया है। यह ज़म्मूरियत परसंद पाकिस्तानी नेताओं की कार्रवाई के लिए बेहतर अवसर है कि वह पूरी ज़िम्मेदारी का परिचय दे और बहुमत द्वारा शासन की आदान-स्थिति बनाएं। पाकिस्तान में सच्ची ज़म्मूरियत न सिर्फ दक्षिण एशिया, बल्कि दुनिया के लिए हितकारी है।

आज के कार्टन



अल्लाह

सद्गुरु

आध्यात्मिक मार्ग पर यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप किसी विशेष जगह पहुंचने का प्रयत्न न कर, क्योंकि जैसे ही आप कुछ विशेष चाहोंगे, आपका मन 'वह विशेष स्थान' बनाने लगेगा। आप अपना खुद का निजी स्वर्ग ही बना लेंगे। आध्यात्मिक प्रक्रिया का अर्थ यह नहीं है कि आप वहम, मतिभ्रम के एक स्तर से निकल कर दूसरे स्तर पर पहुंच जाएं। यह इसलिए है कि आप अपने सारे वहम, सारे मतिभ्रम बिल्कुल ही छोड़ दें, पूर्ण रूप से त्याग दें और वास्तविकता को उसी रूप में स्वीकार करें, जैसी वौह है, क्योंकि ये सारे प्रयत्न सत्य के बारे में हैं। सत्य का अर्थ है, जो अस्तित्व में है, न कि वह जो आप अपने मन में बना लेते हैं। इस अपने मन में भगवान या शैतान देख सकते हैं—दोनों का ही महत्व नहीं है। आप जो कुछ देखते हैं वह आपकी सरकृति पर निर्भर करता है, और उन वीजों पर भी जिनका अनुभव आपको हुआ है। जब आप लोगों को देखते हैं तो उनमें भगवान को देखते हैं, या शैतान को, यह इस पर निर्भर करता है कि आप आशावादी हों या निराशावादी। इसका सर्वधं वास्तविकता से नहीं होता। वास्तविकता तो यह है कि अभी आप यहाँ हैं, और आपको यह भी नहीं पता कि आप किस कारण से यहाँ हैं, कहने से आप हैं, और कहाँ जाएंगे? यहीं जीवन की वास्तविकता है। कुछ धर्मों ने हळशा आशा बांटी है, लेकिन वास्तव में किसी मनुष्य के लिए अगर सबसे खराब कुछ हो सकता है, तो वह है आशा, क्योंकि आशा का अर्थ है कि आप भविष्य की कल्पनाओं में खो जाएंगे, 'अभी हालत खराब है लेकिन कोई बात नहीं, मैं अच्छा आदमी हूँ' लेकिन गरीब हूँ तो वया, जब मैं स्वर्ग में जाऊंगा तब भगवान की गांद में 'बैठूंगा'। यहीं आशा है। आप को बस अपने आप को ऐसे बनाना है कि आप कोई कल्पना न करें, अच्छी या दुरी। आप कोई भगवान या शैतान न बनाएं, खराब और नक्क, अच्छा और खराब न बनाएं। जैसी ही कोई अपापको आशा की झलक देगा, आप कल्पना करने लगेंगे। आशा, झूट का पुलिदा बनाने का तरीका है। अगर आप अनंदमय रूप से आशाहित होंगे, तो बात बन जाएगी। आप ऐसी जगह पहुंच पाएंगे, जहाँ आप को किसी आशा की ज़रूरत न हो। फिर जो भी ही आप टीक रहेंगे, क्योंकि अपने अपने अंदर ही कुछ छा लिया है।

संपादकीय

आभार, आत्मा से उत्पन होने वाली सबसे खुबसूरत कली है। - हेनरी वार्ड बीचर

कब तक रहेगी हालात की मारी प्रकृति बेचारी?

(लेखक-ऋतुष्ठान ददे

सम ऐ प्रकृति की अनदेखी वो बड़ी भूल है जो पूरी मानवता के लिए जीवन, मरण का सवाल है। बस वैज्ञानिकों तक जलत विषय दिटाई ई की है जिसका खामियाजा हमारी भावी पीढ़ी भूत तोगी। इसे हम जानते हैं, लेकिन फिर भी है कि मानते नहीं। इसे नईसापी कहे या गदारी, कुछ भी कह ले लेकिन सच है। यह कभी वर्षों नहीं चुनावी एजेंडा बनते कि राजनीतिक दलों, उनके आकांक्षों जनप्रतिनिधियों तथा नुगाइन्हरी का खाल देखने वालों को तो तो रेंट बदल रही प्रकृति और उसके कारणों के बारे में कितना पता है? सब तो यह है कि राजनीति की विसात में हर क्षीण अग्र पकाई गच्छ खाता है तो वह वही प्रकृति की बदलता ही हम हैं, हमारा अस्तित्व है। ऐसे सवाल जायज हैं, उठने भी चाहिए। पर्यावरण-प्रदूषण की चिन्ता राजनीति में सबसे ऊपर होनी चाहिए। लेकिन सभी राजनीतिक दलों ने बेश्म खामोशी औढ़ी हुई है। लगता ही नहीं कि पर्यावरण और प्रदूषण भी अहम चुनावी मुद्दा बनते तो अस्तित्व के भवित्य की चिन्ता करने की ईमानदार पहल जरूर कहलाती। चुनावी चक्रवास और नेताओं के तुभावने वालों के बीच न तो कोई धर्मी की चिन्ता करने वाला है और न कोई भू-गर्भ और आसमान को लेकर गधीर दिख रहा है। शायद इनका चुनावों से सीधा गत्सा जो नहीं है। लेकिन यह भी नहीं भूताना चाहिए कि इतनी शी भूल या भूलाने की कौशिश जीवन पर धीर-धीर भारी पड़ी जा रही है। हासिल साल बढ़ की बढ़ती भयावहता, धर्मी की बढ़ती तनाव, तो जी से कटते जगत, रेत से चलते होती नदियाँ, गिरियों में तब्लीवाहों ने पहाड़, अंधाधुंध प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हमारी भवित्व पीढ़ी के लिए बड़ा अभिशाप है। उससे भी दुखद यह कि सबको यही कारण है कि देश किसी भी राजनीतिक दल के अहम मुद्दों में ऐसे विषय शामिल ही नहीं हैं। कब तक नहीं रहेंगे यह भी नहीं पता। प्रदूषित होती नदियाँ जिनमीं चिन्ता का विषय हैं उससे बड़ी चिन्ता मानव निर्मित वो कारण हैं जो इसके मूल में हैं। केवल भारत के संदर्भ में बात करें तो भारत में अब 'जल क्रांति' की जरूरत है पेयजल और सिंचाई के लिए घटे और सूखे जल स्रोतों की चिन्ता करनी होगी। वाकई लोगों को स्वरूप ईस पर सोचना ही होगा।

लग जागरूक हो। आँ कुछ कर तभी सकारात्मक नजात निकलते दिंग। बस अद्वा-निदेश को हर राज फहरास्त निकलन लगाय। लेकिन जब तक कुछ करने या पानी को बचाने पर अमलीजामा फहनाने के लिए दोतरे जाही थांडे थर्मेंट तक तक बारिश निकल तुरी होगी। यह हीकैत है। बस इन्हीं दिखाये या अपारिचारिकताओं ने येजल की किटल को और बढ़ाया है। नए दिमाखण्डों के लिए उचित वातावरण नहीं है। जो बचे हैं वो पर्यावरण असंतुष्टन से पिघल रहे हैं। उथी पर 150 लाख बांध किए मी. मे करीब 9-10 प्रतिशत हिमखंड बचे हैं। ठाड़ के साथ गैस बैंबर बनते महानगर, झील से सड़कों तक फैलता केमिकल झाग, सूखे तालाब, लापाता होते पोखर, समरल होते सूखे कुएँ उसके बावजूद अंधाधुंध प्राकृतिक संसाधनों का ढोन खासकर भारत में बड़ी चिन्ता का विषय है। कभी सोचा है कि लगातार बीमार हो रही धरती को सेहतपंद बनाने और उसके स्वस्थ जीवन के लिए घड़ा, जंगल, नदी, तालाब, पोखर बचाना, उन्हें जिन्ना रखना जरूरी है या क़र्कीट के जगल, कल-कारखाने, पांच लापाट की चिमनियों और धूंए के गुबार के बीच मानव निर्मित हीरोशिमा-नागासाकी से भी बड़ा सच बनाना जो नुपराप, बिना आवाज दुनिया के मूँह बांध खड़ा है। दुनिया का विकासित और विकासशील देशों में इसको लेकर बस विनाएं दिखती हैं लेकिन भारत में पर्यावरण और प्रदूषण को लेकर कितनी इमानदार कोशिशों की जा रही है यह भी खुली ऑर्जों दिखता है। काश राजनीतिक दलों के लिए जीवनदायिनी प्रकृति भी मुझ हो पाती और भारत के मध्ये को ऊंचा करने का दावा करने वाले तमाम राजनीतिक दल भी इसे समझ पाते। अब वह वक्त आ गया है जब एक कॉमैन एजेण्डा होना चाहिए जहाँ राजनीति के बराबर प्रकृति के हालातों पर भी बहस हो और परिणाम दिखें। 21 वीं सदी में यह सोचना बेमानी तो नहीं लगता? बात बात राजनीतिज्ञों के ईमान की है, पता नहीं गंभीर होगा भी या नहीं। फिलालाल तो हर रोज हमारी धरती, हमारा आसमान प्रूषण के नए-नए दंश को झील रहा है। जिससे आम और खास, इसान और परिस्तें, जानवर और कीड़े-मकाड़े, फसल के फल हमारे नुमाइदों को नहीं है? यह बैद्ध सोचनीय है। साथी की बेरुखी से डर बस इतना है कि कहीं आसमान का फेंडा पूरा न फट पाए और धरती का कलेजा सूख-सूख सिंकुड़ न जाए! भला कौन और कब सोचेगा कि जब हम ही नहीं होंगे तब राजनीति कहाँ ज्ञोगी?

प्राकृतिक साम्य से पुनर्जीवन का पर्व

हेमंत शर्मा

चैत्र प्रतिपदा, यानी गुरुपी डडवा, अपना न्यू ईयर, नवीनता का पर्व। हम यह मानते हैं कि दुनिया इसी रोज़ बनी थी। यह हमारा नया साल है, लेकिन अपना यह नववर्ष रात के अंधेरे में नहीं आता। हम नववर्ष पर सूरज की फली किरण का स्वरात करते हैं जबकि पश्चिम में शुग्र अंधेरे में नए साल की अगवानी होती है। हमारे नए साल का तारीख से उनमें संबंध नहीं है, जिनमा मौसम से है। उसका आना सर्फ़ कैलेंडर से पता नहीं चलता। प्रकृति ज़क़ज़ोरकर हमें चौतरफ़ा फूट रही नवीनता का अहसास कराती है। पुराने पीले परे पेड़ से गिरते हैं। नई कॉपले फूटी हैं। प्रकृति अपने श्यार की प्रक्रिया में होती है। लाल, पीले, नील, गुलाबी फूल रिखिलते हैं। ऐसे लगता है कि पूरी-की-पूरी सूर्य नड़ हो गई है। नव गति, नव तार, ताल, छंद, नव, सब नवीनता से लबालब। जो कुदरत के इस खेल को नहीं समझते, वे न समझँ। जो नहीं समझँ, उनके लिए फरहत शहजाद की एक ग़ज़ल भी है, जिसे मंदिर रासन से गया था। कॉपले परे फिर पूट आई, श्यार पर निया उसे। वे न समझा है, न समझँ। मार मार कहना उसे। हम दुनिया में सबसे पुरानी सरकृति के लोग हैं। इसलिए समझते हैं कि क्रतु चक्र का धूमान ही शाश्वत है, जीवन है। तभी हम इस नए साल के आने पर वैसी उछल-कूद नहीं करते, जैसी पश्चिम में होती है। हमारे ख्वाख्वाय में इस परिर्तन की गिरामा है। हम साल के आने और जाने दोनों पर विचार करते हैं। पतञ्जल और बसंत साथ-साथ। इस ख्वाख्वा के गहरे सकेत हैं। आदि-अंत, अवसान-आमन, मिलना-बिछुड़ना, पुराने का खन्न होना, नए का आना। सुनने में चाहें भले यह असंकेत लगे। पर है साथ-साथ, एक ही सिक्के के दो पहलू। जीवन का यही सार हमारे नए साल का दर्शन है। काल का पकड़ उस बाटने का काम हमारे पुरुखों ने सबसे पहले किया। काल को बढ़ दिन, महीना, साल बनाने का काम भारत में ही शुरू हुआ। जमन दाशरथिक मैवसुलूर भी मानते हैं—‘आकाश मंडल की गति, ज्ञान, काल निर्धारण का काम पहले-पहल भारत में हुआ था।’ क्रघ्यों कहता है, ‘क्रघ्यों ने विन के साथ हुए इस बंटवारे को बाद में ग्रेगोरियन कैलेंडर ने भी माना। आयरिथ्म, भास्कराचार्य, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त ने छोटी-से-छोटी ओर बड़ी-से-बड़ी काल की इकाई को बहवान। बार घटीने का साल और सात रोज़ का सामान रखने का रिवाज विक्रम संवत् और शुरू हुआ। वीर विक्रमादित्य उज्ज्वलिनी का राजा था। शकों को जिसे रोज उसके देश से खेड़ा, शुरै रोज से विक्रम संवत् बना। इतिहास देखने से लगता है कि कई विक्रमादित्य हुए। बाद में यह घटना ही गई है। पर लोकजीवन में उसकी व्याप्ति न्यायप्रियता का असर उस सिंहासन पर भी आ गया था, जिस पर वह बैठता था। जो उस सिंहासन पर राजा बैटा, गजब का न्यायप्रिय हुआ। लोक में शकों से विक्रमादित्य के युद्ध की कथा नहीं, उसके सिंहासन की चलती है। विक्रम संवत् से 6667 ईसवी पहले सर्वांगी संवत् यहां सबसे पुराना संवत् माना जाता था। फिर श्रीकृष्ण जन्म से कृष्ण कैलेंडर, उसके बाद कलि संवत् आया। विक्रम संवत् की शुरुआत 57 इस्सा पूर्व में हुई। इसके बाद 78 ईसवी में शक संवत् शुरू हुआ। भारत सरकार ने शक संवत् को ही माना है। विक्रम संवत् की शुरुआत सूर्य के मेष राशि में प्रवेश से मानी जाती है। वैत्र शुक्र प्रतिपदा से ही चंद्रमा का ‘द्राजिंशन’ शुरू होता है। इसलिए वैत्र प्रतिपदा चंद्रकला का पल्ला दिन होता है। मानते हैं कि इस रोज़ चंद्रमा से जीवदायी रस निकलता है, जो औषधियों और वस्त्रपतियों के लिए जीवनप्रद होता है। इसलिए वर्ष प्रतिपदा के साथ ही वनसपतियों में जीवन भर आता है। चंद्रवर्ष 354 दिन का होता है। यह भी चैत्र से शुरू होता है। सौरमास में 365 दिन होते हैं। दोनों में हर साल दस रोज़ का अंतर आ जाता है। ऐसे बढ़े हुए दिनों को ही ‘मतमास’ या ‘अतिमास’ कहते हैं। कागज पर लिखे इतिहास से नहीं, परंपरा से हमारी दोनों वर्ष प्रतिपदा से ही यहां वर्ष मानती थी। यही संस्कार मुझमें है। हमारी कास और बाटने को आज भी तिथि-ज्ञान देते रहता है। हमारी परंपरा में नया साल खुशिया का नाम है। जीवन का उत्सव मानते कहीं रंग होता है, कहीं

सू-दोकू नवताल - 2085								
9		2		4	1	7		
1						6		
5	7	3	2				4	
				9	4	8		
4		7				9		6
		5	8	3				
	3				6	5	9	1
		6						7
		9	1	8		2		4

स-दोक - 2084 का हृ

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो। इसका विशेष ध्यान रखें।

ਗਾਂਧੀ ਗੇ ਗਾਂਧੀ

- पाया से जापा-

 - ‘जान की कसम सच कहते हैं हम’ गीत वाली फिल्म—
3
 - ‘पहली पहली बार बलिये’ गीत वाली अक्षय कुमार, प्रीति की फिल्म—3
 - आफका शिवायामी, उका मुझी की ‘रेंग घार का छाया नामा’ गीत वाली फिल्म—4
 - ‘तू मेरे पास ही है’ गीत वाली डी बेचर्टो, मनोज वाजपेयी, मनोज राजपाल, उर्मिला की फिल्म—2
 - फिल्म ‘सल्काम’ में धर्मेन्द्र के साथ नायिका कोन थी—3
 - गोविंदा, उर्मिला मातोंडकर की ‘ये लकड़ी जबान हो मई’ गीत वाली फिल्म—3
 - राकेश गोयल, बिंदिया गोविंदी की फिल्म—2, 2
 - ‘तेरे संग घार में’ गीत वाली फिल्म—3
 - फिल्म ‘जय संतोषी माँ’ के रे’ की नायिका—2
 - सभी डेओल, तब्दी रीमा सें अधिनीत फिल्म—2
 - मंजूर कुमार, प्रेम चोपड़ा, सातारा अधिनीत फिल्म—3
 - ‘चंदा मामा दूर के’ गीत वाली फिल्म—3
 - राखीर कुरु, बीवीटा की फिल्म—2
 - सभी डेओल, रवीना टंडन की ‘सैंगा मान दिल की घारा’ गीतवाली फिल्म—3
 - फिल्म ‘कोइ’ में सुनील ग्रेटो के साथ नायिका कीन थी—2
 - फिल्म ‘चला मुरारी होरो बनाए’ का नायक कोन था—2, 4
 - ‘एक बेचारा घार का मान’ गीत वाली फिल्म—3
 - फिल्म ‘पांच की कमाई’ में सभी डेओल के साथ नायिका—3
 - जीतें, जयप्रदा की ‘आइने के सौ दुकड़े’ गीत

四百三

- | | | | | | | | |
|----|-----|------|-----|----|----|------|----|
| मि | ली | अ | स | ली | न | क | ली |
| ला | अ | म | र | गी | ना | ना | |
| प | ह | च | न | अ | ना | डी | र |
| | | | | | | | |
| म | न | त्रो | ध | | व | ज | |
| फा | क | मे | मे | स | नी | | |
| गु | त्त | डु | श्श | न | डे | | |
| न | को | य | ला | का | म | चो | र |
| | | | | | | | |
| आ | ह | | नी | | | | |
| ग | ज | य | नी | द | ग | वा | |
| | | | | | | | |
| द | | तु | फा | न | दि | ल्ला | गी |
- 'हैलो हैलो बोल के' गीत वाली फिल्म-3
 - 'आ लग आ लगे' गीत वाली फिल्म-2,2
 - विनोद मेहरा, रेखा की फिल्म-2
 - रोमांटिक कुमार, पैरिसी लाला की फिल्म-2
 - 'हेरी उम्मीद तेरी इंजार' गीत वाली अंग्री कपूर, शाहरुख, दिव्या भारती की फिल्म-3
 - अजय, अभिषेक, विजया लक्ष्मी की फिल्म-3
 - अजय, अनिल द्वारा निर्मित अशोक कुमार, किरणी कुमार, पैरिसी ने 1958 के एक फिल्म-3
 - शशि कपूर, रोहर सुमन, रेखा, नीना गुप्ता की फिल्म-3
 - फिल्म 'बल लल लव ल' में अंग्री कपूर के साथ नाचिका कौन थी? -2
 - 'नैनों में बढ़वाला' के 'गोत वाली अजय देवगन, दिव्याकल खाली की फिल्म-2
 - प्रियंका, जैकी, जूही, दिव्या भारती की 'ऐ सनम
- इतन बता' गीत वाली फिल्म-4

 - 'छाँसे से को आ जाओ' गीत वाली संजय दत्त, अभिषेक, जावेंद्र, एशा देओल, राधा सेन, लियना रेण्टो की फिल्म-2
 - धर्मेंद्र, हमा सुलाली की 'गैंगें पे करम अपनों पे सिरम' गीत वाली फिल्म-2
 - 'बल की हसी न्युलाकान के लिए' गीत वाली धर्मेंद्र, हमा सुलाली की फिल्म-3
 - जैकी, अजय खाली, दिव्याल, मनोजा को 'आ कहीं दूँ तेरी जां हाम' गीत वाली फिल्म-4,
 - साथ हमा रोमांटिक नाचिका की फिल्म 'मेरा साथा' का नाचिका कौन थी? -3
 - 'बंधे ये बिंदास हो' गीत वाली अमिताभ, मनोज आजाएँ, रेखा, नीदिता की फिल्म-2
 - 'वा ना मैरीदा नी मालीका लगाना' गीत वाली फिल्म 'बारी बारी' में अजय देवगन के साथ नाचिका कौन थी? -2



लेटेरेस्ट ट्रेड के हिसाब से सजाएं बच्चों का कमरा

अगर सजाने में भले ही कम समय लगता हो लेकिन बच्चे का कमरा डॉकोरेट करते समय बहुत कुछ सोचना पड़ता है। छोटे बच्चे शरारती होते हैं इसलिए उनके कमरे को उनकी आदतों के अनुसार ही सजाना पड़ता है। कमरे की डॉकोरेशन ऐसी ही नींव हिंदू जिसमें वह आसानी से छोटे-छोटे खेलों को खेल सके इसके अधिकारी बेड की कंठवाई भी ध्यान में रखनी चाहिए ताकि बच्चे आपमें से कमरे में रह सकें। आज हम आपको बच्चों के कमरे के लेटेरेस्ट ट्रेड डिजाइन दिखाएंगे जो कि अरामदाता कौशल और देखने में खूबसूरत है। अगर आप बच्चों के कमरे की डॉकोरेशन को लेकर परेशान हैं तो यहाँ से आइडिया ले सकते हैं।

अगर आपका बच्चा थोड़ा चंचल रस्तभाव का है तो इस तरह से कमरों को सजा सकते हैं। बैंड के ईर्झ-गिर्झ बच्चे के पसंदीदा रस्ते के पर्दे लाए। इसके साथ ही बैंड पर खिलौने भी रख सकते हैं। इस तरह से सजा कमरा बच्चे को बैंड बदल पसंद आएगा।

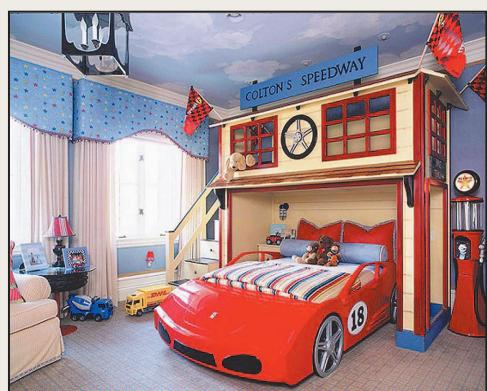
कुछ बच्चे बैंड शांत रस्तभाव के होते हैं। उनके लिए सिपल तरके से सजा कमरा बैंड अधिकारी है। अगर आपके घर में दो बच्चे हैं तो दोनों के एक ही कमरे में अलग-अलग बैंड दें ताकि उनको सोने में परेशानी न हो।

लाल, नीला और पीले रंग का कॉम्बिनेशन बच्चों को बैंड करने से सजाएं। आप डबलबैंड भी बच्चे के कमरों में लगा सकते हैं। मगर ध्यान रहे कि बैंड बच्चे को ऊपर और छोटे को नीचे सोने को रखें।

बच्चे को कमरों को अलग रूप देने के लिए इस तरह के फारी रंगों से सजाएं। अगर आप चाहें तो इस पर कोई अच्छी सी विंट्रीकारी भी करवा सकती है।

जिन बच्चों को जंगली जानवर अच्छे लगते हैं ताके लिए आप जूटिप थीम वाला कमरा सजा सकती है। इस तरह से डॉकोरेट रूम बच्चों को बैंड अच्छा लगेगा। बच्चे के कमरों को खिलौने से इस तरह से सजा सकती है। कमरे में इस तरह रखें खिलौने देखे में बैंड प्यारे लागें।

आजकल 3D आर्ट डॉकोर ट्राइल बहुत चलन में है। बच्चों को भी कमरे की इस तरह की सजावट बैंड अच्छी लगती है।



मले ही आप बच्चे की परवरिश में कोई कसर न छोड़ें, लेकिन लाख सावधानियां बरतने के बाद भी कोई न कोई गलती हो ही जाती है। बच्चों की परवरिश करना आसान काम नहीं है क्योंकि बच्चे बैंड नाजुक और सर्वेदर्जील होते हैं। बदलते गौसम ने उन्हें सर्दी, खांसी और त्वचा सुंबंधी कई प्रॉब्लम भी हो सकती है। ऐसे में उन्हें खास केयर की जरूरत होती है, ताकि उन्हें इन प्रैथमिकियों से बचा कर रखा जा सके।

अक्सर छोटे बच्चे बीमार होते हैं तो सबसे ज्यादा मां डेंशन में पढ़ जाती है, उनकी सेहत सुधारने में लाली रसती है, लेकिन जल्दी नहीं है कि छोटे-छोटे बच्चों के लिए बच्चों को डॉकोर के पास ले जाया जाए, बैंकिंग आप कुछ छोटे-छोटे खुबसूरत इस्तेमाल करके भी बच्चे को इन प्रैथमिकियों से बचा रख सकते हैं। आज हम आपको बच्चों की सेहत दुरुस्त रखने के कुछ टिप्प बताएंगे, जो हर मां को पढ़ा होने चाहिए।

जब बच्चे की हिंकियां रुकने का नाम ही नहीं लेती तो मां अक्सर चिंता में डैड जाती है। इस तरह की प्रैथमिकियां न हो बल्कि बच्चे को एक चम्मच चीनी खिला दें। चीनी खाने से डायफरग्राम की

शरीर में खुजली

अगर बच्चे की शरीर में खुजली हो रही है तो उसके नहाने के पानी में अट्स मिला दें। यह उन बच्चों के लिए भी काफ़ी मददगार है, जिन्हें चिकनपॉक्स की समस्या रहती है। खुजली से राहत मिलती है।

सर्दी भगाएं हल्दी-दूध

बच्चों को जलदी सर्दी लग जाती है। ऐसे में उसे दूध में हल्दी मिलाकर पिलाएं। इससे बच्चों को काफ़ी राहत मिलती।

हिंकी आने पर चीनी

जब बच्चे की हिंकियां रुकने का नाम ही नहीं लेती तो मां अक्सर चिंता में डैड जाती है। इस तरह की प्रैथमिकियां न हो बल्कि बच्चे को एक चम्मच चीनी खिला दें। चीनी खाने से डायफरग्राम की

मासपेशियों को राहत मिलती है और हिंकी रुक जाती है।

गले में खराश

अगर बच्चे के गले में खराश और दर्द है तो उसे 1 चम्मच शहद चढ़ाए। इससे गले की खराश घोवा करने वाले कीटाणुओं को संमाप्त होते हैं और यह खदाम में मीठा होने के कारण बच्चों को पसंद भी बैंड आता है।

पाचन क्रिया दुरुस्त

अगर बच्चे का हाजिमा खराप है तो भी बड़ी प्रेरणानी का सामना करना चाहता है। ऐसे में बच्चों को नींबू चटाएं, इससे दस्त की समस्या दूर रहेगी क्योंकि नींबू में सालिया के निर्माण में कमी आती है और दस्त में आराम मिलता है।

बचपन में ही बच्चे को सिखाएं बचत की अहमियत

आपको पैसे की कमी हो या न हो बच्चों को पैसे की अहमियत समझानी बहुत जरूरी बात है ताकि आप जाकर उन्हें अपनी जिंदगी में फॉन्झेशियल प्रॉब्लम न आए। उन्हें पैसे की बचत करने की आदत डालनी चाहिए। आप कुछ यह आदत अपनी मेहनत की बातें बता कर शील सकते हैं। [पढ़ाने-लिखाने के साथ उन्हें यह समझाना बहुत जरूरी है कि पैसा कमाने के लिए किन्तु मेहनत करनी पड़ती है।] ये बातें उन्हें बचपन से ही सिखानी चाहिए ताकि आपको भविष्य में उनकी कोई परेशानी न हो। बचत की आदत डालने के लिए उनकी जिंदगी परफैक्ट हो सकती है। वह अपने हर सपने का पूरा कर सकते हैं। आइए जानिए आप उन्हें किन बातों द्वारा बचत की आदत डाल सकते हैं।

अपनी मेहनत करने की बातें बताएं बच्चों को बचत की आदत डालने के लिए उन्हें यह बताना जरूरी होता कि पैसा किस तरह से मेहनत करके कमाया जाता है। आप उन्हें यह जरूर बताएं कि आप किस तरह मेहनत करके एक-एक पैसा जोड़ते हैं। इसके लिए उन्हें शुरू से मेहनत करने की आदावत डालें।

उनसे उन्हें यह भी बताएं कि जरूर बताएं कि आदावत डालने की अहमियत समझ आएगी।

पॉकेट मनी से बचत करें
बच्चों को पॉकेट मनी से बचत करने की आदावत डालें। इस आदावत के लिए उन्हें यह लालन दें कि बचपन हुए पैसे से ही अपनी मां-पापी की अहमियत समझ आएगी।

बच्चों को पॉकेट मनी से बचत करें
बच्चों को पॉकेट मनी से बचत करने की आदावत डालें। इस आदावत के लिए उन्हें यह लालन दें कि बचपन हुए पैसे से ही अपनी मां-पापी की अहमियत समझ आएगी।



बच्चों की डाइट में शामिल करें ये जूस, दिमाग होगा तेज

मां-बाप यहीं चाहते हैं कि उनका बच्चा पढ़ने में होशियार हो। अगर आपका बच्चा को उसका खराप रहता है तो उसका शब्द कदम से कदम मिलाकर बच्चा सके। ज़रूरत डेंपर खेलने के लिए भी फॉन्झेशियल एजाम चल रहे। मां-बाप इस समय बच्चों की डाइट का खास ध्यान रखते हैं ताकि उनको अच्छे से अच्छे नंबर मिले। मारन कई बार बच्चा कोशिश करने के बाद भी पैपर के समय सब कुछ भूल जाता है। अगर आप भी चाहती हैं कि बच्चे का दिमाग तेज हो, और वह अच्छे नंबरों के साथ पास होता है, तो उनके डाइट में ये इंके जरूर शामिल करें। इनको पीने से कुछ दिनों में बच्चे की स्मरण शक्ति बढ़ जाएगी।

अनार का जूस

अनार में
एंटी-ऑक्सीडेंट
गुण पाए जाते हैं जो ब्रेन सेल्स को खराब होने से बचाता है।
अगर आपका बच्चा पढ़ाई लिंगाई में थोड़ा सा कमज़ोर होता है तो रोजाना उसको अनार का जूस पीने को दें। लगातार अनार का जूस पीने से कुछ दिनों में आपको अपने बच्चे में फॉर्क दिखाई देने लगता है।

बादाम का जूस

बादाम में प्रोटीन की मात्रा में होता है जो ब्रेन की ग्रोथ बढ़ाने में काफ़ी देखरेख होती है। रोजाना ये शेक पीने से बच्चे का दिमाग तेज होने के साथ ही उसका पेट भी सही रहता है।

एलोवरा जूस

इसमें विटामिन B6 बहुत ज्यादा पाया जाता है। इसको पीने से यादाशत तेजी से बढ़ती है। ये पीने से ब्रेन नहीं होता मगर बच्चे के दिमाग के लिए बेस्ट



टॉनक होता है। अगर आपका बच्चा को उसका स्वाद पसंद नहीं आता तो आप अमरुद के जूस में एलोवरा मिलाकर दें सकते हैं।

ग्रीन टी

ग्रीन टी पॉटी-फॉन्झेशियल का ग्रीन होता है जो दिमाग को शांत करने के साथ ही इसको फ्रेश रखने का काम भी करता है।

